एक नाटक

असग़र वजाहत

जयगान

(मंच पर पुराने, टूटे-फूटे मकान का सेट। बच्चों का सामूहिक गान।)

जय हो, जय हो, जय-जय, जय हो
देश की जय हो धरती की जय हो
चाँद की जय हो सूरज की जय हो
दिन की जय हो रात की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय जय हो

कलम की जय हो, काग़ज़ की जय हो
हवा की जय हो, पानी की जय हो
गाँव की जय हो, शहर की जय हो
जीत की जय हो, हार की जय हो
पानी की जय हो, आग की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय जय हो

पापा की जय हो, बाबा की जय हो
भाई की जय हो, बहन की जय हो
मामा की जय हो, मोती की जय हो
आण्टी की जय हो, अंकल की जय हो
गाय की जय हो, बछड़े की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय-जय हो

(समूह में जयगान करते बच्चे मंच पर नृत्य करते हुए बाहर निकल जाते हैं। सूत्रधार अपनी पंक्तियाँ गाता है।)

सूत्रधार
हाथ जोड़ कर नमन करूँगा
फिर मैं अपने वचन कहूँगा
देखें सब मिलजुल कर देखें
एक निराला नाटक देखें

शहर के बाहर इक कोने में
पेड़ों की झुरमुट के बीच
खेतों से थोड़ा हट कर
सड़क जहाँ मुड़ जाती है
हवा वहाँ रुक जाती है
बस्ती के बिल्कुल कोने में
बना हुआ है घर ये पुराना
इस घर के सब पंछीवासी
पता नहीं कहाँ गए हैं
सन्नाटे का राज यहाँ है

दर टूटे, दीवारें टूटीं
खिड़की टूटी, शीशे टूटे
आँगन टूटा, सीढ़ी टूटी
घर का कोना-कोना टूटा
छत में दरारें पड़ी हुई हैं
पूरे घर में काई जमी है
कोई यहाँ रहता ही नहीं
कोई यहाँ आता ही नहीं

(चूहों के मेकअप में कई बच्चों का प्रवेश। समूह गान)

इस घर में अब हम रहते हैं
हम चूहे हैं, हम चूहे हैं, हम चूहे हैं
छोटे-छोटे प्यारे-प्यारे चूहे हैं
इस घर में अब हम रहते हैं

इस घर में करते हैं राज
इस घर में करते हैं राज
इस घर में बस चूहे हैं
हर कमरे कोठे, आँगन में
हर खिड़की दर, दरवाज़े में
चूहे हैं बस, चूहे हैं, बस चूहे हैं...

(समूह गान करते बच्चे मंच से निकल जाते हैं। दूसरे बच्चे चूहों के मेकअप में आते हैं ये कुछ बड़े बच्चे हैं। और समूह गान गाते हैं।)

सुबह निकल जाते हैं ऑफिस
शाम को वापस घर आते हैं
दिनभर खटते रहते हैं
रात में चैन से सोते हैं।

(समूह नृत्य करता रहता है। एक अभिनेता अलग होकर अपनी पंक्तियाँ गाता है।)

चूहा-1
मैं खेतों में जाता हूँ
छिप के खड़ा हो जाता हूँ

नज़र बचाकर लोगों की
गेहूँ के मोटे दानों को
ले चम्पत हो जाता हूँ।

चूहा-2
मैं एक घर में जाता हूँ
नाली में छिप जाता हूँ
रोटी जब पक जाती है
पूड़ी जब तल जाती है
चावल जब पक जाता है
मैं चुपके से धीरे-धीरे
रोटी का इक टुकड़ा लेकर
सीधा भाग निकलता हूँ।

चूहा-3
मैं मण्डी में जाता हूँ
बोरों के गोदाम में जाकर
जो मिलता है लाता हूँ
कभी चने खा जाता हूँ
कभी मटर ले आता हूँ
कभी जलेबी कभी इमरती
कभी मलाई, कभी मखाने
खाता हूँ बस खाता हूँ।

(अभिनेता मंच से चले जाते हैं और समूह गान के लिए बच्चे आते हैं।)

हर दिन एक नहीं होता है
सुख के पीछे दुख होता है
दुख के पीछे सुख होता है
कभी चाँदनी होती है तो
कभी अँधेर भी होता है
मिलता है कभी हलवा पूड़ी
कभी मिलेगी सूखी रोटी।
रात अँधेरी काली थी
बारिश होती थी घनघोर
पता नहीं क्यों, कैसे आया
मोटा, तगड़ा झबरीला
भूखा, प्यासा गर्वीला।

(कलाकारों की मण्डली चली जाती है। मंच पर बिल्ला आता है। वह चूहों पर हमला करता है। चूहे भागते हैं। सब मंच से चले जाते हैं। चूहा-1 आता है।)

चूहा-1
सुख के दिन गए हमारे
दुख की छाया आ ही गई।

चूहा-2
भयभीत पड़े रहते हैं बिलों में,
डर है समाया सबके दिलों में।

चूहा-3
जब भी हमें पा जाता है,
चबा-चबा खा जाता है।

चूहा-4
चलो करें एक मीटिंग हम
बैठ के सोचें टेक्निक हम
कैसे बचें बिल्ले से हम।

(चूहे एक गोले में बैठ जाते हैं दूसरे चूहे भी आ जाते हैं।)

चूहा-1
एक उपाय सोचा मैंने।

चूहा-3
हमें बताओ, हमें बताओ।

चूहा-1
कुत्ता एक ले आते हैं
कुत्ते खाते हैं बिल्ली को।

चूह-2
बहुत दूर की कौड़ी लाए
यह तो बहुत उत्तम है चाह।

चूहा-4
पर कुत्ते को लाए कौन?
जाकर उसे बुलाए कौन?
हम कुत्ते के पास गए
हमको चट कर जाएगा तो?

चूहा-1
हाँ यह तो सच कहते हो।

चूहा-2
घर के मालिक को ले आएँ?

चूहा-3
घर का मालिक आएगा
पहले हमें भगाएगा।

चूहा-6
सोचो, सोचो मिलकर सोचो
जोड़ो-जोड़ो मिलकर जोड़ो।
बातचीत से बात बनेगी
कोई भली-सी राह खुलेगी
सोचो, सोचो मिलकर सोचो।

चूहा-3
एक आइडिया आया है।

चूहा-4
बोलो, बोलो जल्दी बोलो।

चूहा-3
बिल्ली के गले में घण्टी बाँधें?
जहाँ-जहाँ वह जाएगी
घण्टी टुन-टुन बोलेगी।

चूहा-2
वाह भई वाह, वाह भई, वाह

चूहा-1
घण्टी सुन हम भागेंगे
बिल में जा छिप जाएँगे।

चूहा-3
क्या कहने भई क्या कहने।

(कुछ चूहे जाते हैं और घण्टी ले आते हैं। उसे मंच पर रख देते हैं।)

चूहा-3
(घण्टी बजाता है।)
टन-टन-टन बजती है
कितनी अच्छी घण्टी है।

चूहा-1
काम हमारा बन जाएगा
जान हमारी बच जाएगी।

चूहा-2
(चूहा-3 से)
जाओ ये घण्टी ले जाओ
बिल्ली के दरवाज़े जाओ।
गले में उसके घण्टी डालो।

चूहा-3
मैं जाऊँ? मैं जाऊँ? मैं जाऊँ?

चूहा-1
हाँ तुम जाओ, तुम जाओ।

चूहा-3
बिल्ली मुझे खा जाएगी।

चूहा-1
(चूहे-4 से)
तुम सब से मोटे चूहे हो
तुम जाओ, करो ये काम।

चूहा-4
मोटा हूँ पर चूहा हूँ
बिल्ली चूहे खाती है।
मोटे चूहे पसन्द हैं उसको
मुझको पूरा खा जाएगी
दुबला-पतला चूहा जाए
उसे बिल्ली न सताये कहो।

चूहा-3
(चूहा-2 को पकड़कर)
सबसे दुबला चूहा ये है
ये जाएगा घण्टी लेकर।

चूहा-2
मैं? मैं? मैं?
दुबला, पतला मैं?
छोटा, ठिगना मैं?
मैं? मैं? मैं?
मुझे झपट मारेगी
बिना चबाए गटकेगी।

चूहा-4
चलो सभी मिलकर चलते हैं।

चूहा-3
देखो, हम सब चूहे हैं
हम बिल्ली के पास गए तो
सबको चट कर जाएगी।

चूहा-1
फिर क्या करें मेरी बहन?

चूहा-2
क्या रास्ते सब बन्द हैं?

चूहा-4
नहीं, नहीं ये मत सोचो मेरे भाई
रस्ता एक नहीं होता मेरे भाई
रस्ते कई होते हैं मेरे भाई
रस्ते कभी बने होते हैं मेरे भाई
रस्ते कहीं बनाते हैं मेरे भाई
रस्ता कोई बनाना होगा।

चूहा-3
आओ इधर सब
कान लाओ इधर सब
ध्यान से सुनो सब
बात पक्की है सुना

(चूहा-3 सबके कान में कुछ कहता है सब खुश हो जाते हैं। मंच पर अँधेरा। मंच पर प्रकाश आता है। बिल्ला अपने आसन पर बैठा है।)

बिल्ला
घर क्या है ये स्वर्ग है पूरा
चूहे खाता हूँ दस-बीस
फिर पानी जम कर पीता हूँ
गद्दे पर पड़कर सोता हूँ,
घर क्या है ये स्वर्ग है पूरा।

(कई चूहे अन्दर आते हैं। एक के हाथ में फूलों की माला है। बिल्ला उन्हें देखकर गुर्राता है।)

चूहा-1
आप हमारे हैं महाराज
आप हमारे हैं सरताज।

चूहा-2
तुम राजा हो
हम प्रजा हैं।

चूहा-3
जय हो, जय हो, जय महाराज।

चूहा-1
हमने ये सोचा महराज
हमें पकड़ने के चक्कर में
आप लगाते हैं चक्कर।
हमने ये सोचा महराज
रोज़ सबेरे दस चूहे
आपकी सेवा में आएँगे।
आपकी भूख बुझाएँगे।

बिल्ला
बहुत ठीक सोचा है तुमने
अब मैं मोटा बहुत हुआ हूँ।
चूहों का पीछा करने से
अच्छा है जो तुमने कहा है
रोज़ सवेरे दस चूहे?

चूहा-2, चूहा-3
हाँ महराज, हाँ महराज

चूहा-1
आप हमारे राजा हैं।
आपकी जय होए महराज।

चूहा-2
हम जयमाला लाए हैं।
(फूलों की माला दिखाता है।)

बिल्ला
इतने अच्छे-अच्छे फूल
कहाँ से लाए हो ये फूल।

चूहा-3
आपके गले में हम महराज
जयमाला डालेंगे महराज
उसके बाद रोज़ सवेरे...

(सब चूहे कोरस में।)
रोज़ सबेरे दस चूहे
दस चूहे हाँ दस चूहे
मोटे चूहे, तगड़े चूहे
अच्छे चूहे, पक्के चूहे
आपकी सेवा में होंगे।
रोज़ सवेरे दस चूहे।

बिल्ला
(अपनी गर्दन झुका लेता है।)
डालो जल्दी जयमाला
बड़ी भली है जयमाला।
सुन्दर है ये जयमाला।

(चूहे बिल्ले के गले में जयमाला डाल देते हैं और तेज़ी से दूर हट जाते हैं। बिल्ला कुछ समझ नहीं पाता है।)

बिल्ला
जाओ अब दस चूहे लाओ
मोटे, तगड़े चूहे लाओ
साथ गरम मसाला लाओ
मिर्ची, चटनी, धनिया लाओ
तेल नहीं, असली घी लाओ
किचन में जाकर गैस जलाओ
उस पर मैं चूहे तलूँगा...

चूहा-1
महराज गर्दन तो हिलाओ।

(बिल्ला गर्दन हिलाता है तो घण्टी बजती है चूहे हँसते हैं।)

बिल्ला
ये कैसी जयमाला?

चूहा-2
यही तो असली जयमाला है
घण्टी है जयमाला है
खतरे की जयमाला है।

चूहा-3
अब जब भी तुम हिलो-डिलोगे
चलो, फिरोगे दौड़ोगे
घण्टी बाजेगी टन-टन-टन-टन-टन

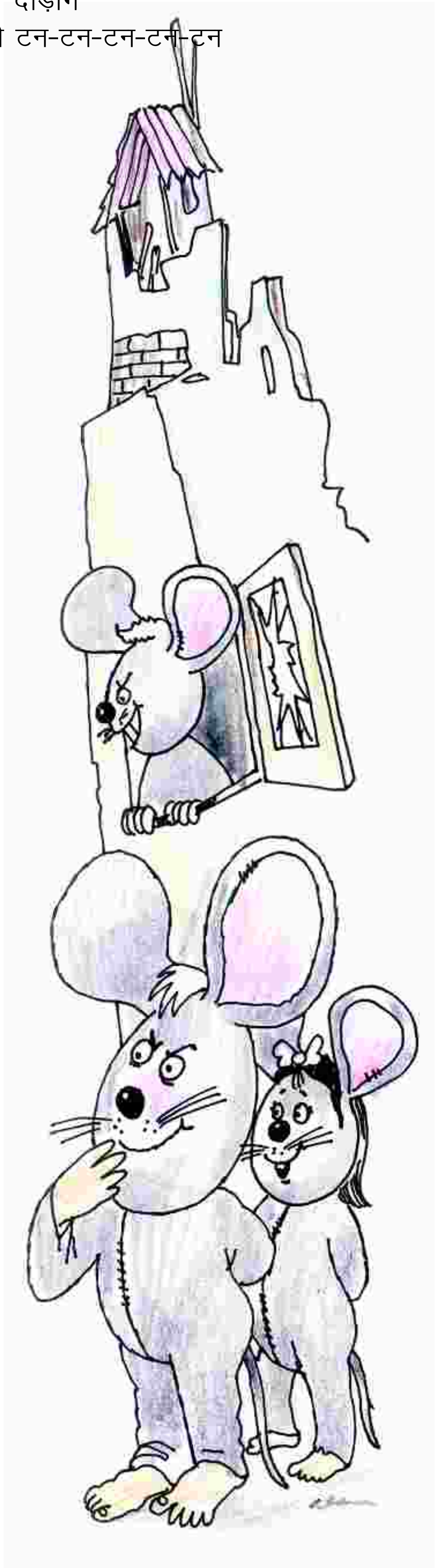

चूहा-4
घण्टी की आवाज़ को सुनकर
हम चम्पत हो जाएँगे
बिल में जा छिप जाएँगे।

(बिल्ला उठकर चूहों के पीछे भागता है। घण्टी बजती है चूहे भागते हैं और हँसते हैं। बिल्ला बहुत प्रयास करता है पर किसी चूहे को पकड़ नहीं पाता है। मंच पर अँधेरा होता है फिर प्रकाश आता है।)

(चूहों का समूह गान)

जय हो, जय हो, जय-जय-जय हो
घण्टी की जय हो, बुद्धि की जय हो
सोच की जय हो, समझ की जय हो
ज्ञान की जय हो, अकल की जय हो
घण्टी की जय हो, माला की जय हो
जनता की जय हो, लोगों की जय हो
शब्दों की जय हो, अक्षर की जय हो
आपकी जय हो, हमारी जय हो
न्याय की जय हो, प्रेम की जय हो
दया की जय हो, करूणा की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय जय हो
घण्टी की जय हो,
बुद्धि की जय हो

(प्रकाश धीमा पड़ता है। नृत्य करते बच्चे शहर निकल जाते हैं।)

मैना

एक लोककथा
गोविन्द शर्मा

एक जंगल में दो मैना रहती थीं। एक दिन एक गड़रिए ने एक मैना को पकड़ा और उसे पिंजरे में बन्द कर दिया। पिंजरे वाली मैना बैठी-बैठी रोज़ाना रोती रहती, जबकि दूसरी मैना हमेशा अपनी बहन को गड़रिए के पिंजरे से बाहर निकालने की तरकीब सोचा करती। एक दिन पिंजरे की मैना को उदास देख गडरिया बोला, “तुम उदास क्यों हो?”

मैना बोली, “आज मुझे अपनी बहन की याद आ रही है। तुम उसके समाचार तो ले आओ। बेचारी क्या पता कैसी है अब।”

गड़रिया बोला, “वह अगर मिल जाए तो क्या कहूँ उससे?” “नहीं, कुछ नहीं कहना। अगर मिल जाए तो बस राज़ी-खुशी का कह देना।” मैना ने कहा।

गड़रिया काफी देर तक मैना को ढूँढता रहा। अचानक उसकी नज़र पेड़ की डाल पर बैठी मैना पर पड़ी तो वह बोला, “मैना, तुम्हारी बहन ने राज़ी-खुशी का समाचार दिया है। तुम कैसी हो?”

आज़ाद मैना उसकी बात सुनकर पहले तो कुछ सोचती रही। फिर बोली, “मेरी तबियत आज खराब है। लगता है जल्दी ही मरने वाली हूँ।” इतना कहकर वह पेड़ की डाल से नीचे गिर पड़ी।

गड़रिए को बड़ा दुख हुआ। उसने उसे उठाया और एक झाड़ी में फेंक दिया। झाड़ी में फेंकते ही वह फुर्र से उड़ गई।

गड़रिए को बड़ा अचम्भा हुआ। घर पहुँचकर उसने मैना को सारी बातें सुना दीं। अगले दिन उसने देखा पिंजरे में मैना मरी हुई थी। दुखी मन से उसने पिंजरा खोला और मैना को निकालकर बाहर झाड़ी में फेंकने चला गया।

गड़रिए ने उसे ज्यों ही झाड़ी में फेंका वह फुर्र से उड़ गई।